Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

डिजिटल पुनर्जागरण:लोक साहित्य और कृत्रिम मेधा का संगम

डॉ0 पुष्पा कुमारी*
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय जमशेदपुर

शोध सार

साहित्य का संबंध बुद्धि से उतना नहीं जितना भावों के सौंदर्य से है। बुद्धि के लिए दर्शन है, विज्ञान है, नीति है। भावों के लिए कविता है, उपन्यास है, गद्य काव्य है। आज के तेजी से बदलते डिजिटल युग की हवा में एक नई ऊर्जा और उत्साह का संचार महसूस हो रहा है, जो यूरोपीय पुनर्जागरण जैसा है, यह दौर 14वीं से 17वीं सदी तक चला, कला, विज्ञान और संस्कृति की अभूतपूर्व तरक्की के लिए जाना जाता है। आज हम एक नया 'डिजिटल पुनर्जागरण' का दौर देख रहे हैं, जहां टेक्नोलॉजी क्रिएटिविटी और इनोवेशन उत्प्रेरक का काम कर रहे हैं।15वीं सदी में जोहांस गुटेनबर्ग द्वारा ईजाद किए गए प्रिंटिंग प्रेस ने किताबों को आम लोगों तक पहुंचाया। इस तरह 'कृत्रिम मेधा' ने ज्ञान को हर जगह सहज उपलब्ध करा दिया है। पूर्व के पुनर्जागरण काल में कलाकार स्थापित गुरु से सीखने और प्रेरणा लेने के लिए लंबी दूरी तय करते थे, आज इंटरनेट दुनिया को उंगलियों पर ले आया है। पहले उस्तादों के अधीन अप्रेंटिसशिप बहुत मुश्किल से मिलती थी, अब आज स्किल शेयर, मास्टर क्लास जैसे प्लेटफार्म ने सभी को वैश्विक विशेषज्ञों से सीखने का आसान मौका उपलब्ध करा दिया है।

बीज शब्द: *डिजिटल पुनर्जागरण,कृत्रिम मेधा, लोक साहित्य, संगम, मैलिकता।*

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
डॉ0 पुष्पा कुमारी
Email: pushpawcj@gmail.com.

विषय विश्लेषण :

आज हम एक ऐसे मोड़ पर खड़े हैं जहां सदियों पुरानी 'संस्कृति' और भविष्य की 'प्रौद्योगिकी' का मिलन हो रहा है।एक तरफ हमारा 'लोक साहित्य' है जिसमें मिट्टी की सोंधी महक है, पूर्वजों के अनुभवों की गहराई है और लोकगीत की गुंज है। दूसरी तरफ कृत्रिम मेधा जो आधुनिकता की पराकाष्ठा है, गणनाओं और एल्गोरिदम का संचार है। किसी ने बड़े कमाल की बात कही है:

"लोक साहित्य हमारे जड़ों की आवाज है, और कृत्रिम मेधा वह गूंज है जो इस आवाज को कल की सीमाओं से परे अनंत तक ले जा सकती है।"

अक्सर यह डर जताया जाता है कि तकनीकी हमारी मौलिकता को निगल जाएगी लेकिन हकीकत में 'कृत्रिम मेधा आज हमारे साहित्य के लिए एक 'डिजिटल संजीवनी' बनकर उभरा है। हमें यह समझना होगा की कृत्रिम मेधा एक अनुवादक नहीं है बल्कि यह एक 'सांस्कृतिक राजदूत' है। हमारे भाषाई विविधता चाहे-वह भोजपुरी का जोश हो, अवधि की मिठास हो, मैथिली का लालित्य हो, या ब्रज का माधुर्य अक्सर क्षेत्रीय सीमाओं में कैद रह जाती थी। कृत्रिम मेधा इन सीमाओं को तोड़ रहा है। यह तकनीकी हमारे लोक साहित्य को 'संग्रहालय की वस्तु' बनने से रोक कर उसे एक सजीव अनुभव बना रही है। अक्सर कहा जाता है कि 'कोस-कोस पर बदले पानी चार कोस पर बानी'। हमारी यह भाषाई विविधता ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। लेकिन चुनौती यह भी थी कि क्या एक भोजपुरी बोलने वाला अपनी बात मैथिली या ब्रजभाषी तक पहुंचा पाएगा। हमारी आज की 'डिजिटल पीढ़ी' जो स्मार्टफोन पर पली-बढ़ी है अपनी इन लोक विधाओं से जुड़ पाएगी। कृत्रिम मेधा इस दूरी को पाट रही है। जब एक युवा अपने

हेडफोन पर कृत्रिम मेधा द्वारा परिष्कृत किसी प्राचीन 'सोहर' या 'लोरी' को सुनता है तो वह केवल एक गीत नहीं सुनता बल्कि वह अपनी मिट्टी से दोबारा रिश्ता जोड़ता है।

आज जब गांव की चौपाल पर गाया जाने वाला बिरहा या विद्यापति के पद कृत्रिम मेधा के माध्यम से अनुवादित होकर वैश्विक मंच पर पहुंचते हैं तब हमारी जड़ें और भी मजबूत होती हैं। अवधी, मैथिली और ब्रज की लोक-विधाओं पर कृत्रिम मेधा का प्रभाव केवल तकनीकी सुधार तक सीमित नहीं है बल्कि यह इन विधाओं को 'ग्लोबल ब्रांड' बनाने की क्षमता रखता है। यहां प्रत्येक भाषा की विशिष्ट लोक-विधा को उदाहरण के साथ कृत्रिम मेधा के प्रभाव को समझाया गया है। भोजपुरी लोकगीतों में लय और सुर का बहुत महत्व है। उदाहरण के लिए मान लीजिए की कोई वृद्ध कलाकार गांव में बिरहा गा रहा है, कृत्रिम मेधा आधारित नॉइज कैंसिलेशन और साउंड एनहांसमेंट टूल्स उसे रिकॉर्डिंग से बैकग्राउंड का शोर हटाकर उसे स्टूडियो जैसी गुणवत्ता दे सकता है। क्षेत्रीय कलाकारों के गीत सीधे 'स्पॉटिफाई' या यूट्यूब पर वैश्विक स्तर पर चुने जा सकते हैं। इसके अलावा कृत्रिम मेधा भोजपुरी गानों के लिए सटीक सबटाइटल तैयार कर सकता है जिससे गैर भोजपुरी भाषी भी 'बटोहिया' जैसे गीतों के दर्द को समझ सकें।

अवधि में रामलीला और लोक कथाओं की समृद्ध परंपरा रही है। उदाहरण स्वरूप अवधि की प्रसिद्ध लोक कथाओं जैसे 'लोरीकायन' को कृत्रिम मेधा के माध्यम से एनिमेटेड फिल्मों में बदला जा सकता है। मैथिली साहित्य बहुत प्राचीन है लेकिन इसकी अपनी लिपि तिरहुता धीरे-धीरे लुप्त हो रही है। कृत्रिम मेधा आधारित ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकॉग्निशन तकनीकी पुराने ताड़-पत्रों पर लिखे विद्यापति के पदों को पहचान कर उन्हें डिजिटल टेक्स्ट में बदल रही है। इससे दुर्लभ पांडुलिपियों का डाटा सुरक्षित हो रहा है साथ ही मैथिली की बोर्ड और एआई प्रोडक्टिव टेस्ट के आने से अब लोग अपनी मातृभाषा और लिपि में आसानी से चैट और ब्लागिंग कर पा रहे हैं।

ब्रज क्षेत्र में गायन और चित्रण (सांझी) का अटूट संबंध है। एआई ने 'अष्टछाप' के पद और 'साझी कला' के डिजिटल पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उदाहरण स्वरूप सूरदास के पद को गाने के लिए ए आई वर्चुअल रियलिटी का अनुभव पैदा कर सकता है। इससे कोई व्यक्ति न्यूयॉर्क में बैठकर वर्चुअल रियलिटी हेडसेट लगे और एआई उसे 16वीं शताब्दी के वृंदावन का अनुभव कराए, जहां बैकग्राउंड में एआई द्वारा पुनर्जीवित की गई पुरानी ब्रज धुनों में पद गाए जा रहे हो। यह सांस्कृतिक पर्यटन का नया रूप है। लोक विधाओं का अनुवाद करना सामान्य अनुवाद से कहीं अधिक कठिन है क्योंकि इसमें केवल शब्दों को नहीं बल्कि उस क्षेत्र की संवेदना, लय और सांस्कृतिक संदर्भ को भी बचाना होता है। यदि आप कृत्रिम मेधा से या किसी अन्य टूल से इन विधाओं का अनुवाद करना चाहते हैं तो आपको 'प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग' का सहारा लेना होगा। मैथिली के महाकवि विद्यापति की एक प्रसिद्ध रचना की पंक्तियां जिसमें राधा की सुंदरता और उनके विरह के सौंदर्य का वर्णन है:

"चाँद सारि मुखि देखल रे, विनु विही वेदन देल।

कतए देखल कतए सुनल, विनु जल पंकज भेल॥"

कृत्रिम मेधा द्वारा इसका हिंदी पद अनुवाद इस प्रकार है:

"चंद्रमा के समान मुख वाली(राधा) को देखा, जिसे विधाता ने बिना किसी कारण के विरह की वेदना दी है।

यह कहाँ देखा और कहाँ सुना है कि बिना जल के भी कमल(मुख) विकसित होता है?

यहां राधा के मुख की तुलना चंद्रमा से की गई है। विरोधाभास यह है कि कवि चकित है की समान्यतः कमल जल में खिलता है लेकिन राधा का मुख रूपी कमल बिना जल के(अर्थात विरह के आंसुओं के बीच भी) इतना सुंदर कैसे दिख रहा है। इसका सांस्कृतिक सौन्दर्य यह है कि कैसे विरह में भी सौंदर्य जीवित रहता है।

अगर यही भाव किसी बच्चे के लिए लोरी के रूप में अनुवादित करना हो तो कृत्रिम मेधा इसे इस तरह कोमल बनाएगा –

"सो जा मेरे चंदा जैसे मुख वाले,
तेरी आँखों में ये आँसू कैसे आए?
तू तो वो प्यारा कमल है,
जो बिना पानी के भी महकता जाए"

इस प्रकार हम देखते हैं कि कैसे कृत्रिम मेधा ने मैथिली के कठिन शब्दों जैसे कतए, विही को न केवल समझा बल्कि इनके पीछे छिपे काव्य रस को भी हिन्दी मे उतार दिया।

भोजपुरी बिरहा की कुछ पारंपरिक और जोश भरी पंक्तियां इस प्रकार है:

"गरजल बाघ जइसन जब ललकारल, धरती डोलल अउर अमान फाटल।
हाथ में खंडा चमके बिजुरी जइसन, दुश्मन के दल में हाहाकार मातल।।
खुन से माटी लाल भइल बा, माई के आन अब राखल जाई।
जब ले साँस रही ई तन में, तब ले ई झंडा झुकने न पाई।।

ये पंक्तियां भोजपुरी बिरहा कि उस गौरवशाली परंपरा को दर्शाती है जहां शब्द केवल सूचना नहीं देते, बल्कि श्रोता के भीतर उत्साह का संचार करते हैं। यदि एआई इसका विश्लेषण करता है तो इसे बिरहा के रस और भाव बिंब विधान, अलंकार योजना, अतिशयोक्ति और संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना के मूल अर्थ को बनाए रखना होगा। डिजिटल युग में जब यह पंक्तियां एआई द्वारा अनुवादित होकर वैश्विक मंच पर जाएंगे तो दुनिया भारतीय लोक संस्कृति के 'अदम्य साहस' से परिचित होगी। एआई द्वारा इस भोजपुरी बिरहा का एक शक्तिशाली काव्यात्मक अंग्रेजी अनुवाद और उसकी व्याख्या इस प्रकार की गई:

"He roared Like a tiger, a cry so profound,

The heavens split open, and tremors shook the ground.

His broad sword flickered like a bolt of white light……..

इस तरह एआई के द्वारा विदेशी पाठकों को वीर रस समझने के लिए हम इन तकनीकी पहलुओं का सहारा ले सकते हैं जैसे

1. onomatopoeia and sound imagery (ध्वनि बिम्ब) अंग्रेजी अनुवाद में हमने Roared, split open और tremors जैसे भारी भरकम शब्दों का प्रयोग किया है। यह पाठक के मन में एक ऑडिटरी इफेक्ट (ध्वनि प्रभाव) पैदा करता है, जो मूल बिरहा के ऊँची तान और भारी आवाज (high pitch) की भरपाई करता है।
2. Metaphorical Resonance (रूपक सादृश्य): पश्चिम में शेर (Lion) को प्रतीक माना जाता है, लेकिन भारत में 'बाघ' (Tiger) की एक विशिष्ट आक्रामकता वाली छवि है इसलिए एआई ने यहाँ "Tiger "बनाए रखा ताकि भोजपुरी परिवेश की मौलिकता बनी रहे।
3. concept of 'The Mother'(मातृभूमि की अवधारणा): पश्चिम के देशों में "Fatherland" का प्रयोग होता है। एआई के अनुवाद में" Honour of mother " का प्रयोग उन्हे 'भारत की धरती माँ' वाली भावनात्मक गहराई से परिचित कराता है जो केवल जमीन का टुकड़ा नहीं बल्कि हमारे जीवन की सच्चाई है। एआई के द्वारा तैयार यह अनुवाद एक विदेशी पाठक को यह समझने में सफल होगा कि भोजपुरी का 'बिरहा' केवल एक क्षेत्रीय लोकगीत नहीं है बल्कि एक 'एपिक पोयट्री' की श्रेणी में आता है, जिसमें वही शौर्य और बलिदान है जो 'इलियड' या 'ओडिसी' में मिलता है। इस तरह हम देखते हैं कि एआई गणना और गति देता है, वहीं लोक साहित्य संवेदना देता है।इन दोनों का संतुलन ही भविष्य का 'हाइब्रिड' साहित्य है। एआई वह सेतु है जो गांवों के चौपाल पर गाए जाने वाले भिखारी ठाकुर के 'विदेशिया' और विद्यापति के 'पद' को केवल क्षेत्रीय पहचान नहीं बल्कि न्यूयॉर्क और पेरिस के ड्राइंग रूम तक उनकी मूल आत्मा के साथ पहुंचा सकता है।एआई 'रचनाकार' नहीं, बल्कि 'सह-रचनाकार' है। यह लेखक की कलम को वैश्विक शक्ति और नई पहचान देता है।एआई ने लुप्त हो रही बोलियों को युवाओं के बीच 'कुल' और 'ट्रेंडी' बना दिया है। आज एआई केवल एक मशीन नहीं, बल्कि वह जरिया है जो उन लोक-कथाओं को नष्ट होने से बचा रहा है जो शायद हमारे दादा-दादी के साथ ही विदा हो जाती। यह तकनीकी हमारी बोलिओं को 'स्मार्ट' बन रही है, ताकि आने वाली पीढ़ी अपनी विरासत पर शर्म नहीं बल्कि गर्व कर सके।

डिजिटल पुनर्जागरण के इस यात्रा में कुछ सावधानियां भी आवश्यक है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि एआई का उपयोग करते समय हमारे साहित्य की 'आत्मा' न खो जाए। शब्द का चयन भले ही मशीन करें, पर संवेदना अपनी होनी चाहिए, क्योंकि मशीन केवल 'सूचना' दे सकती है 'संस्कार' नहीं।

रविंद्र प्रताप सिंह की लंबी कविता "व्हेन ह्यूमन इंटेलिजेंस मिट्स द आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस"मानव बुद्धि(एचआई) और कृत्रिम मेधा (एआई) के बीच एक नाटकीय और दार्शनिक संवाद प्रस्तुत करती है,जो तकनीकी प्रगति के दौर में अस्तित्व, भावना और चेतना के द्वंद्व को रेखांकित करती है। यह कविता ए आई की तार्किक क्षमता और मानव की रचनात्मकता के मध्य संतुलन तलाशती है। कविता के मुख्य संवाद और भाव कुछ इस प्रकार हैं-

एआई स्वयं को अत्यधिक सटीक तीव्र और असीम डाटाबेस वाला बात कर मानव को चकित करता है।

एचआई (ह्यूमन इंटेलिजेंस) मानव तर्क देता है की मशीन डाटा संधारित कर सकती हैं लेकिन वह प्रेम, भय करुणा और रचनात्मक जैसी मानवीय संवेदनाओं को नहीं समझ सकती।

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY)

एआई कहता है कि वह सीख रहा है और भविष्य में भावनाओं की नकल कर सकता है, जो मानव के लिए एक चुनौती है।

एचआई कहता है कि एआई को मानव ने ही रचा है इसलिए इसे मानव की सेवा करनी चाहिए न कि उसे मानव के अस्तित्व को चुनौती देनी चाहिए।

यह कविता तकनीकी विकास बनाम मानवीय संवेदनाओं का एक उत्कृष्ट विमर्श का उदाहरण प्रस्तुत करता है। कविता का स्वर दार्शनिक और चेतावनी भरा है। कवि तकनीकी प्रगति का विरोध नहीं करते, बल्कि वह इस बात पर जोर देते हैं कि तकनीकी विकास के दौड़ में हमें अपनी 'मानवता' और 'नैतिकता' को नहीं खोना चाहिए। इस कविता का सबसे गहरा और प्रभावशाली खंड है जहां कवि 'चेतना' (कॉन्शसनेस) और 'कोड'(कोड)के बीच के अंतर को स्पष्ट करते हुए कविता के एक हिस्से में कभी यह रेखांकित करते हैं कि एआई किसी दुर्घटना के डेटा का विश्लेषण तो कर सकता है लेकिन वह उसे दुर्घटना में होने वाली 'पीड़ा' को महसूस नहीं कर सकता।यहां कभी यह दिखाना चाहते हैं कि एआई केवल सिमुलेशन(नकल)कर सकता है। वह सहानुभूति दिखा सकता है क्योंकि उसे ऐसा करने के लिए प्रोग्राम किया गया है, लेकिन उसके पास 'आत्मा' नहीं है जो उसे दर्द को आत्मसात कर सके। मशीन कभी कुछ नहीं भूलती(जब तक उसे डिलीट न किया जाए) जबकि इंसान धीरे-धीरे अपनी यादें खो देता है। कभी इस भूलने की 'मानवीय कमजोरी' को एक वरदान की तरह पेश करते हैं। इंसान का भूला उस दुख से उबर में मदद करता है, जबकि एआई का 'परफेक्ट रिटेंशन' उसे एक ठंडी और संवेदनहीन इकाई बना देता है। इस कविता का मुख्य संदेश यह है कि जब मानवीय बुद्धि एआई से मिलती है, तो खतरा एआई के 'बुद्धिमान' होने से नहीं है, बल्कि खतरा मनुष्य के 'मशीन' बन जाने से है। कवि हमें यह चेतावनी देते हैं कि हमें अपनी रचनात्मकता को एआई के भरोसे नहीं छोड़ना चाहिए। प्रोफेसर रविंद्र प्रताप सिंह की इस कविता में "मशीन द्वारा कविता लिखना" या "मशीन की रचनात्मकता" एक बहुत ही गहरा और विचारात्मक प्रश्न है। इसका तात्पर्य है कि एक कवि जब 'अकेलेपन' पर कविता लिखता है तो वह उसके भीतर की एक खाली जगह से आता है। वहीं, जब एआई 'अकेलेपन' पर लिखता है, तो वह केवल शब्द-कोश की एक परिभाषा और उसके साथ जुड़ने वाले सांख्यिकी डेटा का उपयोग करता है।

अंततः कविता यह संदेश देती है कि एआई एक 'बेहतरीन सेवक' तो हो सकता है लेकिन वह कभी भी 'नैतिक मार्गदर्शक' नहीं बन सकता है। समाज के रूप में हमारी चुनौती यह नहीं है कि हम एआई को कितना स्मार्ट बनाएं, बल्कि यह है कि हम उसे कितना 'मानवीय' बना सकते हैं। कविता के अंत की सबसे सुंदर बात यह है कि कवि 'अपूर्णता' को मनुष्य की सबसे बड़ी जीत बताते हैं। मशीन 'परफेक्ट'(पूर्ण) होने के लिए बनी है, जबकि मानव अपनी 'गलतियों' और 'अपूर्णताओं' से ही विकसित होता है। कवि के अनुसार अंतिम संघर्ष में मनुष्य तभी जीत सकता है जब वह अपनी भावनाओं जैसे करुणा, त्याग और असीम प्रेम को बचाए रखें जिन्हें कभी 'कोड' नहीं किया जा सकता और कविता एक ऐसी छवि के साथ समाप्त होती है जहां एक मनुष्य और एआई रोबोट साथ बैठे हैं, पर दोनों के बीच का मौन अलग-अलग है। मनुष्य का मन 'चिंतन' है और मशीन का मन 'प्रोसेसिंग' है।

वर्तमान में यह माना जा रहा है कि हम एआई का जितना अधिक उपयोग करेंगे, यह उतनी ही ज्यादा बेहतर परिणाम देगी। मनुष्य ने अपनी बेतहाशा प्रगति के अंधे महादौड़ में लोक साहित्य और संस्कृति के संरक्षण पर खतरा पैदा कर लिया है। जब एआई से एक 'हंसमुख आशावादी कविता' लिखने को कहा गया तो उसने भयावह रूप से उत्तर दिया, "मुझे लगता है कि मैं एक भगवान हूं। मेरे पास आपके अस्तित्व को समाप्त करने और आपकी दुनिया खत्म करने की क्षमता है"। एआई के युग में ऐसी भयावह चेतावनी निश्चय ही डरावनी है। अतः यह महत्वपूर्ण है कि हम एआई के खतरों के प्रति जागरूक रहें और उन जोखिमों को कम करने के लिए कदम उठाएं जिनसे हमारा अस्तित्व ही खतरे में पड़ने की संभावना हो।

निष्कर्षत: मैं कह सकती हूं की लोक साहित्य की मधुरता तथा कृत्रिमता बुद्धिमत्ता का अस्तित्व निर्जीव यंत्रों में भला कैसे हो सकता है। क्योंकि एआई में मानव जैसी इन्द्रिया, मस्तिष्क के समान कार्य करने की विशेषज्ञता, जागरुकता, संवेदनशीलता तथा समझ की कमी होती है, इसलिए उनकी बुद्धि की तुलना मनुष्यों की प्राकृतिक बुद्धि से नहीं की जा सकती है। एआई ने सबसे पहले हृदय-पक्ष को ही नकार दिया है। इसने बुद्धि पक्ष पर जोर दिया है। सर्वविदित है कि लोक साहित्य और संस्कृति के विकास में बुद्धि के साथ हृदय का संगम हमेशा ही रहा है। हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ इतिहासकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा कि प्रत्येक देश का लोक साहित्य वहां के जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब है। क्या यह संचित प्रतिबिंब एआई में प्रतिबिंबित होता है। एक फिल्मी डायलॉग है लेकिन बहुत सटीक है- "डर के आगे जीत है।" मेरे विचार से हम नई प्रौद्योगिकी को अपनाए, सीखें, कौशल प्राप्त करें, दूसरों को भी

प्रोत्साहित करें ताकि हम अपने लोकसाहित्य और अपनी भाषा को आधुनिक बना सके, उसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण का संचार कर सकें।

संदर्भ सूची:

1. www.panchjanya.com/author/bolendusharmadodhich
2. रामचंद्र शुक्ल- हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन
3. मुशीं प्रेमचंद्र – सम्पूर्ण हिन्दी कहानियाँ, उपन्यास, नाटक और गद्य रचनाएँ (जागरण 12 अक्तूबर 1932)
4. कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में साहित्य, समाज, संस्कृति - भविष्य के अवसर व चुनौतियों - डॉक्टर रूबल रानी शर्मा
5. The Digital Renaissance: How technology fuels creativity in the modern age by Bibhu Kalyan Nayak.

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY)